REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2018

माध्यमिक स्तर के सामान्य तथा मूक बधिर विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

विजय कुमार यादव
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, शिक्षा विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर.

सारांशः

नये–नये वैंज्ञानिक आविष्कार, भौतिक सुख–सुविधाओं के प्रति बढता मोह और अन्धाधुन्ध विकास की चाह के फलस्वरुप पृथ्वी और उसके पर्यावरण की क्षति अपनी चरम सीमा तक पहुँचने लगी है, जिससे आज सम्पूर्ण विश्व के समक्ष पर्यावरणीय संकट उत्पन्न हो रहा है। पर्यावरण के प्रति जागरूकता लाने एवं इसके संरक्षण के लिए पर्यावरण शिक्षा को पाठ्यक्रम में स्थान दिया जाने लगा है। विद्यालय से ही विद्यार्थी सामाजिक सरोकार तथा अपने अधिकारों एवं कर्तव्यों को समझकर एक अच्छे नागरिक के रूप ढल कर समाज का हिस्सा बनते हैं। इसलिए विद्यालय में पर्यावरण की शिक्षा इसके संरक्षण के क्षेत्र में दूरगामी परिणाम देने वाला हो सकता है। विद्यालय में आने वाले विद्यार्थी विभिन्न क्षमता के होते हैं। सामान्य बालक औसत शरीर वाले एवं स्वस्थ होते हैं तथा सामान्य शारीरिक श्रम वाले कार्यों को करने में किसी प्रकार बाधा का अनुभव नहीं करते। इनकी सीखने की गति एवं शैक्षिक उपलब्धि औसत होती है तथा संवेगात्मक रूप से संतुलित होते हैं। परन्तु जब कोई बालक किसी शारीरिक अपंगता, सीखने की अयोग्यता, बौद्धिक पिछड़ेपन, भावात्मक एवं व्यावहारिक विकारों या बौद्धिक प्रखरता एवं सृजनात्मकता की अत्यधिकता प्रवृत्ति के कारण सामान्य बालकों से भिन्न होता है, उसे विशिष्ट बालक की श्रेणी में रखा जाता है। विशिष्ट विद्यार्थियों में जन्मान्ध, बहरे, कमजोर दृष्टि वाले, ऊँचा सुनने वाले, श्रवण दोष, देर से बोलना, गूँगे आदि बालक 'सांवेदिक रूप से विकलांग' की श्रेणी में आते हैं। इन विद्यार्थियों में ग्रहण करने की क्षमता किसी शारीरिक दोष के कारण पूरी नही होती।

इस शोध पत्र में वाराणसी जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत सामान्य एवं मूक बधिर विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता का स्तर क्या है? इसका अध्ययन किया गया है।

सार शब्द : पर्यावरण जागरूकता, सामान्य, मूक बधिर।

प्रस्तावनाः

वर्तमान मे अनियत्रित औद्योगीकरण, ग्रीन हाउस गैसों और तापीय ऊर्जा केन्द्रों में हो रही अभिवृद्धि के कारण पृथ्वी का तापमान तेजी से बढ रहा है, और साथ ही जैव विविधता की क्षति, अम्लीय वर्षा, पारिस्थितिक असंतुलन, ओजोन परत का क्षरण, जैसी विकराल समस्याएँ दिन–प्रतिदिन बढती जा रही है। इन समस्याओं का निराकरण किसी एक स्तर से नही, बल्कि सामूहिक प्रयासों से ही सम्भव हो सकता है। इसी तथ्य को स्वीकारते हुए गत तीन दशकों से इस दिशा में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर अनेक सफल–असफल प्रयास किए जा रहे है। पर्यावरण जीवन और जीव के विकास को प्रभावित करने वाली सभी वाहन दिशाओं और प्रभावों की समग्रता के रूप में परिभाषित किया जा सकता है (इण्टरनेशनल एनसाइक्लोपीडिया ऑफ सोशियल साइंसेज, 1968)।

व्यक्ति के पर्यावरण के अंतर्गत वे समस्त प्राकृतिक व रासायनिक घटक आते है, जो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से उसके जीवन और व्यवहार को प्रभावित करते है(एन0सी0ई0आर0टी0)। अर्थात पर्यावरण से तात्पर्य उस समूची भौतिक एवं जैविक व्यवस्था से है, जिसमें जीवधारी रहते हैं, बढ़ते–पनपते हैं अपनी स्वाभाविक प्रवृत्तियों का विकास करते हैं।

पर्यावरण जागरूकता :

सामान्यतः पर्यावरण शिक्षा एवं पर्यावरण जागरूकता को एक ही अर्थ में प्रयुक्त करते हैं परन्तु इसमें सार्थक अंतर है। पर्यावरण शिक्षा व्यापक है और पर्यावरण जागरूकता इसका एक अंग। पर्यावरण शिक्षा में ज्ञानात्मक, क्रियात्मक तथा भावात्मक तीनों पक्षों के विकास का प्रयास किया जाता है जबकि पर्यावरण जागरूकता में पर्यावरण संबंधी तथ्यों, घटकों, प्रत्ययों तथा कारणों की जानकारी दी जाती है। यह केवल ज्ञानात्मक पक्ष के विकास तक सीमित है। विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता पर्यावरण के सम्बन्ध में कहानी, भाषणों इत्यादि के माध्यम से बतलाकर, चित्र, फिल्म, वीडियों इत्यादि दिखाकर तथा उमसे क्रियाकलाप करवाकर, लायी जाती है। जागरूकता लाने की सभी विधियाँ सामान्य बालकों के लिए तो उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं परन्तु विशिष्ट बालकों के लिए खास तौर से शारीरिक अपंगता वाले जो सांवेदिक रूप से विकलांग हैं, उनके लिए नहीं।

पर्यावरण जागरूकता के विभिन्न प्रयास

मानव को पर्यावरण के लिए जागरूक करने के लिए राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न प्रयास हुए जिनका विवरण अधोलिखित है–

पर्यावरण जागरूकता के भारतीय प्रयास

पर्यावरण के प्रति भारत की सक्रिय अभिरूचि 1972 ई0 में प्रारम्भ हुई, जबकि तत्कालीन प्रधानमंत्री (स्व0 श्रीमती इंदिरा गाँधी) ने मानव पर्यावरण पर स्टॉकहोम मे आयोजित संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन में भाग लिया। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग में शीर्ष सलाहकार के रूप में कार्य करने वाली 'राष्ट्रीय पर्यावरणीय योजना एवं समन्वय समिति' (NCEPC) बनायी गयी।

चतुर्थ पंचवर्षीय योजना (1969–74) में किसी विकास योजना में पर्यावरणीय समस्याओं के सम्यक् पहचान की आवश्यकता को इंगित किया। इस समिति के अन्तर्गत लोगों में पर्यावरणीय जागरूकता नीतियों को अपनाया गया। NCEPC के उत्तराधिकारी के रूप में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के अन्तर्गत 1980 ई0 में पर्यावरण विभाग की स्थापना की गयी। यह विभाग पर्यावरण के अध्ययन एवं प्रदूषण अनुवीक्षण तथा नियंत्रण के प्रशासनिक दायित्व की सर्वोच्च एजेंसी है। लोगों को पर्यावरणीय समस्याओं एवं संकटों के प्रति कई बार जागरूक करने के प्रयास सरकारी एवं गैर–सरकारी स्तर पर किये गये। पर्यावरणीय चेतना जागृत करने और पर्यावरणीय समस्याओं के निदान हेतु राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न कानूनों तथा सम्मेलनों का आयोजन किया गया है। राष्ट्रीय स्तर पर निम्नलिखित आंदोलन पर्यावरण चेतना के विशेष उदाहरण हैं–पश्चिमी घाट बचाओं आन्दोलन (1988), नर्मदा बचाओं आन्दोलन, एप्पिको आन्दोलन, चिपको आन्दोलन(1973), केरल प्रान्त में शान्त घाटी आन्दोलन, इन आन्दोलनों के अतिरिक्त वन्य जीव संरक्षण कानून (1972), वन संरक्षण कानून (1980), पर्यावरण संरक्षण कानून (1986), मोटर गाड़ी कानून (1998) आदि द्वारा जनसामान्य को जागरूक करने का प्रयास किया जा रहा है।

पर्यावरणीय जागरूकता के अन्तर्राष्ट्रीय प्रयास

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी पर्यावरण के प्रति उत्तरदायित्वों को जगाने एवं चेतना को व्यापक बनाने के लिए सन् 1972 ई0 में स्टॉकहोम में आयोजित पर्यावरण सम्मेलन में यह विचार रखा गया कि विश्व के सभी देश 5 जून को 'विश्व पर्यावरण दिवस' रूप में मानाएंगे। सन् 1972 ई0 में स्टॉकहोम में आयोजित विश्व पर्यावरण सम्मेलन के पश्चात विश्व भर में पर्यावरण ह्रास के प्रति जागरुकता बढ़ी।ब्राजील के शहर रियो डि जेनेरों में

पृथ्वी सम्मेलन (1992) दक्षिणी अफ्रीका के जोहान्सबर्ग में सन् 2002 में विश्व पृथ्वी सम्मेलन हुआ। कोपेनहेगेन में 6 से 18 दिसम्बर, 2009 को आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में तीन मुख्य मुद्दे रहे–

- विकसित देश 2020 तक ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में भारी कटौती का निर्णय करें और इसके लिए बनने वाले कानूनी फ्रेमवर्क शामिल हों।
- विकसित देश अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन करते हुए गरीब और विकासशील देशों के लिए आर्थिक पैकेज की घोषणा करें ताकि वे जलवायु परिवर्तन के खतरों से निपटने के लिए कदम उठाएं।
- गरीब और विकासशील देशों के लिए अपने बूते पर्यावरण संरक्षण उपाय करना कठिन है, इसलिए यह निर्णय होना चाहिए कि कैसे गरीब देशों को न्यूनतम कीमतों पर गारब देशों को पर्यावरण संरक्षण के उपाय उपलब्ध कराया जाए। लेकिन इन मुद्दों पर अब तक सर्वसम्मति नहीं बन पायी।

इसमें कोई संदेह नही है कि राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय किए जाने वाले सम्मेलनो से लोग जागरूक हुए हैं। इसन कार्यक्रमों की सफलता के प्रशंसनीय उदाहरण–प्राथमिक, माध्यमिक स्तर के साथ ही उच्च स्तर के छात्रों के लिए 'पर्यावरण अध्ययन' विषय को अनिवार्यता से ही विद्यार्थी जागरूक हो जाएंगे, ऐसा पूर्ण सम्भव नहीं है। इस प्रकार की योजनाओं तथा कार्यक्रमों की वास्तविक सफलता तभी सम्भव है, जब छात्र अपने कार्यों के द्वारा जन सामान्य को भी पर्यावरण संरक्षण के लिए बाध्य करें।

पर्यावरणीय जागरूकता और संयुक्त राष्ट्र संघ

पर्यावरणीय जागरूकता को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता एवं प्रतिष्ठा दिलवाने में संयुक्त राष्ट्र और उसके विभिन्न अंगों का इस दिशा में किये गये प्रयासों का संक्षिप्त विवरण अधोलिखित हैं :–विश्व संरक्षण संघ, अन्तर्राष्ट्रीय जीवशास्त्रीय कार्यक्रम, मानव और जैव मण्डल कार्यक्रम, विभिन्न संयुक्त राष्ट्र प्रस्ताव, विश्व स्वास्थ्य संगठन, विश्व वसुन्धरा दिवस, स्टाकहोम सम्मेलन, बेलग्रेड कार्यशाला, अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रम, तिब्बत्ति सम्मेलन

सन् 1975 ई0 में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (U.N.E.P.) ने अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरणीय शिक्षा कार्यक्रम की शुरुआत की। इस कार्यक्रमक का उद्देश्य सामान्यतः विचारों तथा सूचनाओं का आदान–प्रदान तथा क्रियान्वयन पर्यावरण सेवा उपलब्ध कराना, अनुसंधान में समन्वय तथा विकास, अनुदेशनात्मक कार्यक्रमों की सुविधा तथा इनके कार्यक्रमों से जुड़े हुए व्यक्तियों को शिक्षा प्रदान करना आदि था।

विद्यालयी पर्यावरणः

विद्यालय एक ऐसा विशिष्ट पर्यावरण है जहॉ जीवन के निश्चित गुण और कुछ विशेष प्रकार की क्रियाओं और व्यवसायों की शिक्षा इस उद्देश्य से दी जाती है कि बालक का विकास उचित दिशा में हो(जॉन डीवी)। विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने के लिए अनेक बालक आते हैं, लेकिन प्रत्येक बालक एक दूसरे से भिन्न होते हैं। विद्यार्थियों को दो वर्गों में बांटा जा सकता है– (अ) सामान्य बालक (ब) विशिष्ट बालक।

शारीरिक, बौद्विक, सामाजिक, सांवेगिक तथा सीखने की गति एवं शैक्षिक उपलब्धि की दृष्टि से औसत बालक, सामान्य बालक है। विशिष्ट बालक को क्रो एवं क्रो परिभाषित करते हुए कहते है– विशिष्ट प्रकार अथवा विशिष्ट शब्द किसी एक ऐसे लक्षण अथवा उस लक्षण को धारण करने वाले व्यक्ति पर लागू किया जाता है जबकि लक्षण को सामान्य रूप से रखने से विचलन की सीमा इतनी अधिक होती है कि उसके कारण व्यक्ति अपने साथियों का विशिष्ट ध्यान प्राप्त करता है और इसके व्यवहार की अनुक्रियाएँ और क्रियाएँ प्रभावित होती है। अनुसंधानकर्ता ने प्रस्तुत शोधपत्र में मूक बधिर एवं दृष्टिबाधित विद्यार्थियों को लिया है। अतः उनका यहाँ वर्णन अपेक्षित है।

मूक बधिर बालक

मूक बधिर बालक विशिष्ट बालकों के अंतर्गत 'शारीरिक रूप से भिन्न' प्रकार के बालक के अंतर्गत 'सांवेदिक रूप से विकलांग' श्रेणी में आते हैं। इनको विभिन्न रूप से परिभाषित किया गया है – जिसका कान कार्यात्मक दृष्टि से अक्षम हो (ASHA), जिसकी श्रवण क्षमता 91 कठ से कम हो, (W.H.O) वह बालक श्रवण

बाधित कहलायेगा। जो बालक हियरिंग ऐड के बिना श्रवण न कर पाये वह बालक श्रवण बाधित या मूक बधिर कहलाता है(I.L.O)। श्रवण दोष वह दोष है जिसमें बालक की कान की शारीरिक संरचना में किसी प्रकार दोष या असामान्यता हो या कान कार्यात्मक रूप से दोषमुक्त हो.(R.C.I)। जिस व्यक्ति की कर्ण क्षमता 60 कंठ से कम हो, वह व्यक्ति मूक बधिर कहलायेगा (P.W.D act)।

मूक बधिर बालक की पहचान विशेषताएँ–

- किसी बात को बार–बार पूछना।
- वाणी दोष या भाषा विकास का न हो पाना।
- कान की वाहय संरचना में दोष।
- भाषा एवं वाणी दोष के कारण उसका मानसिक क्षमता की सामान्य बच्चो की तुलना में कम होता है।

मूक बधिर विद्यार्थियों की पहचान यदि उनमें इलाज लायक कर्ण दोष होता है तो उसका इलाज कर स्कूल में दाखिला के लिए माता पिता को सलाह दिया जाता है। जैसे– काकोलिया ट्रान्सप्लान्ट किया जाता है। हियरिंग ऐड की मदद से बच्चों को पढ़ाया जा सकता है।

शोध का उद्देश्य :

1. सामान्य विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन करना ।
2. मूक बधिर विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन करना।
3. सामान्य तथा मूक बधिर विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाः

वाराणसी जनपद में स्थित माध्यमिक स्तर के सामान्य तथा मूक बधिर विद्यार्थियों मे पर्यावरणीय जागरूकता का तुलना करने के लिए शून्य परिकल्पना का निर्माण किया गया है–

1. सामान्य एवं मूक बधिर विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता के प्रति कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अनुसंधान में प्रयुक्त न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में शोधपत्र में आवश्यकतानुसार समय, श्रम तथा लागत के अनुकूल 'असम्भाव्यता प्रतिचयन विधि' के अन्तर्गत 'सोददेश्य प्रतिचयन विधि' से वाराणसी जिले के दो विद्यालयों का चयन किया गया है। सामान्य विद्यार्थियों कें लिए '**बंगाली टोला इण्टर कालेज वाराणसी**' तथा मूकबधिर विद्यार्थियों कें लिए मूकबधिर विद्यार्थियों से सम्बन्धित, **''विमल चन्द्र घोश मूक बधिर विद्यालय''**, छोटी गैबी वाराणसी। प्रत्येक विद्यालय से 25 विद्यार्थियों का, इस प्रकार से कुल 50 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।

प्रस्तुत शोधपत्र में उददेश्य परक विधि का प्रयोग करते हुए प्रतिदर्श का चयन किया गया है जिसका विवरण निम्नवत् हैः–

बलक	विद्यालय	सँख्या
सामान्य	बंगाली टोला इण्टर कालेज वाराणसी	25
मूक बधिर	विमल चन्द्र घोष मूक बधिर विद्यालय, छोटी गैबी वाराणसी	25

शोध का उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में डा0. प्रवीण कुमार झा द्वारा निर्मित मानवीकृत प्रश्नावली ''पर्यावरण जागरूकता मापनी'' का प्रयोग किया गया है। इसमें पर्यावरण जागरूकता से सम्बंधित कुल 51 प्रश्न हैं।

उपकरण की विश्वसनीयता

इस मापनी की विश्वसनीयता निम्न तीन विधियों से निर्धारित की गयी हैं ।

1. K-R विधि
2. परीक्षण विधि
3. स्पिलिट हॉफ विधि

इस मापनी का परीक्षण विघालय जाने वाले 14–21 वर्ष के बालक व बालिकाओं पर किया गया।

उपकरण की वैधताः

इस उपकरण में पर्यावरण जागरुकता मापनी का सहसंम्बन्ध गुणांक इस मापनी के वर्तमान प्राप्तांको को टरनीती के पर्यावरण जागरुकता मापनी कें साथ संगठित करने पर .83 पाया गया । अतः उपकरण वैध है।

विवरण एवं अंकन प्रकिया

पर्यावरण जागरूकता मापनी मे कुल 51 प्रश्न हैं। जिनमे से 43 सकारात्मक व 8 नकारात्मक प्रकार के प्रश्न है। प्रत्येक प्रश्न के उत्तर के लिए दो विकल्पो को निर्धारित किया गया है– सहमत, असहमत। प्रत्येक सही उत्तर के लिए 1 अंक तथा गलत उत्तर के लिए 0 अंक है।

उपकरण में 51 प्रश्नो का निर्माण 5 आयामों कें आधार पर किया गया है–

क्र0सं0	आयाम
1.	प्रदूषण का कारण
2.	भूमिवन तथा वायुमण्डल का संरक्षण
3.	मानव स्वास्थ्य का संरक्षण
4.	नाभिकीय,तापीय प्रदुषण से सम्बन्धित प्रश्न
5.	वन्य जीव–जन्तुओं का संरक्षण

इस मापनी में प्रश्नों का स्तर निम्न प्रकार रखा गया हैं –

जागरुकता स्तर	प्राप्तांक सीमाएं
उच्च	37–51
सामान्य	16–36
निम्न	0–15

यदि इस स्केल के अन्तर्गत छात्रों कें प्राप्तांक अधिक है तो उनमें पर्यावरण के प्रति जागरुकता अधिक होगी।

शोध पत्र की परिसीमाः

1. प्रस्तुत शोध पत्र में कक्षा 9 के 14 वर्ष से 21 वर्ष की आयु के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।
2. प्रस्तुत शोध पत्र में केवल वाराणसी जनपद के शहरी बालको को ही लिया गया है।

उद्देश्यों के अनुसार आकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

उद्देश्य 1. ''सामान्य विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन करना ।''

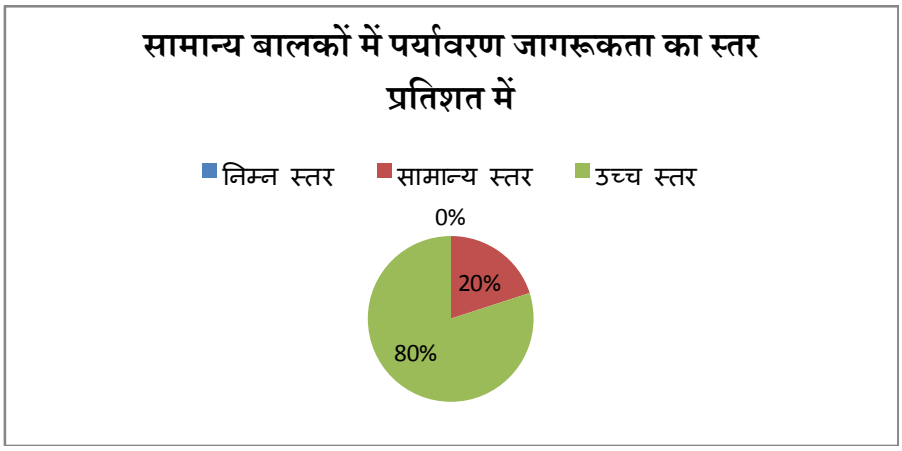

प्रथम उद्देश्य के संन्दर्भ में अध्ययन से पाया गया कि 25 में से 21 सामान्य विद्यार्थियों का प्राप्तांक उच्च जागरूकता स्तर के मध्य तथा चार विद्यार्थ्यों का औसत जागरूकता स्तर के मध्य पाया गया अर्थात 80 प्रतिशत सामान्य विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता का स्तर उच्च एवं 20 प्रतिशत बालकों में पर्यावरणीय जागरूकता का स्तर सामान्य है। आकड़ों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर के सामान्य विद्यार्थी पर्यावरण के प्रति अधिक जागरूक हैं। इनमें पर्यावरण से जूडी समस्याओं एवं संरक्षण सम्बंधित जानकारी है।

उद्देश्य 2. ''मूक बधिर विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता का अध्ययन करना।''

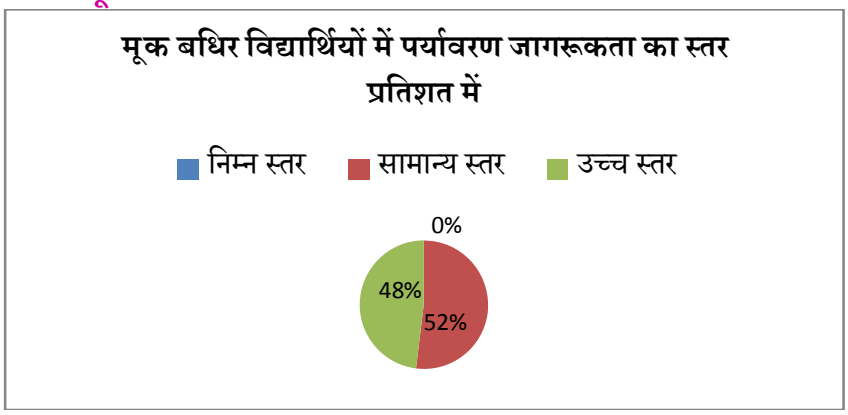

द्वितीय उद्देश्य के संन्दर्भ में अध्ययन से पाया गया कि 48 प्रतिशत मूक–बधिर विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता का स्तर उच्च एवं 52 प्रतिशत बालकों में पर्यावरणीय जागरूकता का स्तर सामान्य है तथा एक भी विद्यार्थी निम्न जागरूकता स्तर का नहीं पाया गया।

प्रदत्तों की व्याख्या

H_0 परिकल्पना का परीक्षण : सामान्य विद्यार्थियों एवं मूक बधिर विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता के प्रति कोई सार्थक अंतर नहीं है।''

प्रस्तुत शुन्य परिकल्पना के परीक्षण हेतु प्राप्तांकों की व्याख्या 't' परीक्षण के माध्यम से किया गया। प्राप्त परिणामों को तालिका संख्या 1.1 में दर्शाया गया है, तदोपरान्त व्याख्या प्रस्तुत की गई है।

तालिका संख्या–1.1
सामान्य विद्यार्थियों एवं मूक बधिर विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता संबंधी आंकडो का
मध्यमान, मानक विचलन एवं टी

क्र.स.	न्यादर्श	संख्या N	मध्यमान M	मानक विचलन S.D	टी 't'	मुक्तांश df
1	सामान्य बालक	25	42	4.08	5.57	48
2	मूक बधिर बालक	25	35	4.77		

उपर्युक्त तालिका संख्या 1.1 में प्रस्तुत गणना द्वारा प्राप्त 't' का मान 5.7 है जो .05 स्तर पर तालिका के 't' मान 2.01 से अधिक है। अतः सम्बन्धित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। अर्थात सामान्य विद्यार्थियों एवं मूक बधिर विद्यार्थियों में पर्यावरणीय जागरूकता के प्रति सार्थक अंतर है।

सामान्य तथा मूक बधिर विद्यार्थियों में पर्यावरण जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन

हेतु निर्धारित उद्देश्यों के लिए निर्धारित शून्य परिकल्पना के परीक्षण एवं आंकड़ों के विश्लेषण के उपरान्त प्राप्त परिणामों का निम्नलिखित ग्राफ के माध्यम से प्रदर्शित किया जा रहा है –

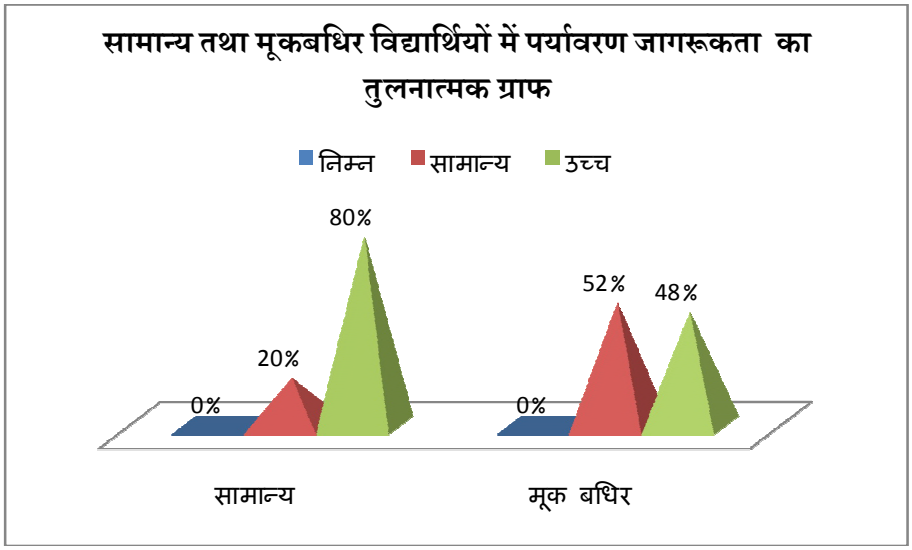

निष्कर्ष:

तालिका संख्या 1.1 से प्राप्त परिणाम के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वाराणसी जनपद के माध्यमिक स्तर के सामान्य विद्यार्थियों एवं मूक–बधिर विद्यार्थियों की पर्यावरणीय जागरूकता के प्रति सार्थक अंतर है। अर्थात सामान्य बालक मूक–बधिर विद्यार्थियों की अपेक्षा पर्यावरण के प्रति अधिक जागरूक है और मूक बधिर बालक सामान्य विद्यार्थियों की अपेक्षा पर्यावरण के प्रति कम जागरूक हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

अम्बस्त, आर0एस0 (1992). इकोलाजिकल एन्वायरमेंट स्टडीज इन एजुकेशन बुच, एम0पी0 (सम्पादित)
अग्निहोत्री, संजीव (2010). हो सकती है तबाही, जागरण जोश', दैनिक जागरण प्रेस, कानपुर, जनवरी, पृ0 16.
अवस्थी, एम0एन0 (2006).पर्यावरण अध्ययन, लक्ष्मी नारायण दहेलवी प्रकाशन, आगरा।
अग्रवाल, उमेश चन्द्र (2004).पर्यावरण संरक्षण, चाणक्य सिविल सर्विसेज टुडे, अंक–8, पृ0 32–36.
गर्ग, राजीव (1997).पर्यावरण शिक्षा', अविराम प्रकाशन, नई दिल्ली।
गाँधी, इन्दिरा (1984).सेफ गार्डिग एनवायरमेंट', विली इस्टर्न लिमिटेड, नई दिल्ली।
गुप्ता, एस0पी0 (2003).सांख्यिकी विधियाँ, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

गोयल, एम0के0 (2005).पर्यावरण शिक्षा, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
जैन, एच0सी0 (2000).पर्यावरण संचार शिखा एवं प्रबन्धन', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
जैड़ा, मदन (2009).कार्बन का कारोबार', हिन्दुस्तान दैनिक, पृष्ठ 9, दिसम्बर 11': वाराणसी।
जैड़ा, मदन (2009).हमें भी बदलनी होगी जीवन शैली, हिन्दुस्तान दैनिक, पृ0 91, सितम्बर 25; वाराणसी।
नारंग, एम. के.(2016). समावेशी शिक्षा, अग्रवाल पब्लिकेशनः आगरा.
ढोलकिया, आर0पी0 (2003).एन एकोलॉजिकल इन साइप्स एण्ड एन्वायरमेंटल', वैल्यूज, एन इण्डियन महेंद्र मौर्य (2009).वाराणसी जनपद में स्थित विभिन्न राज्य विश्वविद्यालय की मानविकी एवं शिक्षा संकाय के विद्यार्थियों की पर्यावरण जागरूकता का अध्ययन।' लधु शोध प्रबन्ध, म0गाँ0काशी विद्यापीठ, वाराणसी।
भारती, अनीता (2006).ए स्टडी ऑफ रिलेशनशिप बिटविन एन्वायरमेंट एवेयरनेस एण्ड साइंटिफिक एटीट्यूट अमंग हायर, सेकेण्डरी स्टूडेंट ऑफ वाराणसी सिटी', शोध ग्रन्थ।
धनकड़, रविन्द्र (2009).जलवायु परिवर्तन का सच और भारत', समसामयिकी महासागर, अंक : 10, पृ0 40–47, अरिहन्त, मीडिया प्रोमोटर्स, मेरठ।
हैकने (2002).ए मॉडल कम्प्रीहेंसिव प्रोग्राम इन अरबनइनवायरमेंटल एजूकेशन', इसाइक्लोपीडिया, ब्रिटैनिका, 2009।